Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

OBJECTIVE OBSERVATION METHOD

बाह्य निरीक्षण विधि का विकास अंतर्निरीक्षण विधि के विरोध में हुआ। उंट तथा टिचेनर ने चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान के विषय वस्तु माना और अंतर्निरीक्षण को इसकी विधि माना। लेकिन वाटसन ने इसका विरोध करते हुए चेतन अनुभूति के स्थान पर व्यवहार को मनोविज्ञान की विषय-वस्तु माना और अंतर्निरीक्षण के बदले वाह्य-निरीक्षण को मनोविज्ञान की विधि माना। वाह्य-निरीक्षण का अर्थ ऐसी विधि से है जिसके द्वारा प्राणी के व्यवहार का अध्ययन भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में तटस्थ भाव से किया जाता है।निरीक्षण करने वाला प्राणी के व्यवहार का अध्ययन उसी रूप में बार-बार करता है, जिस रूप में वह व्यवहार होता है। वह अपनी ओर से कुछ घटाता- बढ़ाता नहीं है। निरीक्षण के आधार पर जो आंकड़े प्राप्त होते हैं, उनकी सत्यता की जांच के लिए वह बार-बार अपने अध्ययन को दोहराता है। यदि हर बार एक ही तरह के आंकड़े मिलते हैं तो उन्हें सत्य मान लिया जाता है।

वाह्य निरीक्षण विधि में प्राणी की क्रियाओं का अध्ययन प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूप में किया जाता है। प्राणी की कुछ क्रियाएँ ऐसी होती है, जिन्हें बाहर से देखा जा सकता है। जैसे हंसना, दौड़ना, रोना, भागना आदि ऐसे व्यवहार हैं जिनका निरीक्षण बाहर से किया जा सकता

है। इसे प्रत्यक्ष निरीक्षण कहते हैं। लेकिन प्राणी की कुछ क्रियाएँ ऐसी है जिन्हें बाहर से नहीं देखा जा सकता है। ऐसी क्रियाओं के निरीक्षण के लिए कुछ खास तरह के यंत्रों की आवश्यकता होती है। जैसे पाचन-क्रिया का तेज या मंद होना, रक्त-चाप का घटना-बढ़ना, हृदय की धड़कन में कमी-बेशी होना इत्यादि क्रियाओं का निरीक्षण विशेष प्रकार के यंत्रों से ही संभव होता है। इस प्रकार के निरीक्षण को अप्रत्यक्ष निरीक्षण कहते है।

वाह्य-निरीक्षण दो परिस्थितियों में किया जाता है। एक तो यह कि इसका व्यवहार स्वाभाविक परिस्थिति में होता है और दूसरा यह कि इसका व्यवहार नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है। स्वभाविक परिस्थिति में वातावरण अनियंत्रित रहता है। इसे वाह्य-निरीक्षण विधि कहा जाता है। दूसरे शब्दों में जब किसी व्यवहार या घटना का ध्यान स्वभाविक या अनियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है तो इसे ही वाह्य- निरीक्षण विधि कहते हैं।

वाह्य-निरीक्षण विधि के गुण-

1. वस्तुनिष्ठ-विधि:- वाह्य-निरीक्षण विधि का एक मुख्य गुण यह है कि यह एक वस्तुनिष्ठ विधि है। इस विधि में निरीक्षणकरता प्राणी के व्यवहार का अध्ययन तटस्थ भाव से उसी रूप में करता है। जिस रूप में वह व्यवहार होता है।
2. पुनरावृत्ति:- इस विधि में पुनरावृत्ति का गुण भी पाया जाता है। चेतन अनुभव इतना चंचल होता है कि अंतर्निरीक्षण विधि में पुनरावृत्ति के गुण का आभाव देखा जाता है। लेकिन चेतन अनुभूति के तुलना में व्यहार अधिक स्थिर होता है। इसलिए इसका बार-बार निरीक्षण करना संभव होता है।
3. प्रमाणीकरण:- इस विधि में प्रमाणीकरण का गुण भी देखा जाता है। एक निरीक्षणकरता का निष्कर्ष कहा तक सत्य है इसकी जांच कोई भी दूसरा निरीक्षणकरता अपने तौर पर कर सकता है ।

4. समय तथा श्रम की बचत:- वाह्य निरीक्षण विधि का एक गुण यह भी है कि इसमे समय तथा श्रम की बचत होती है। इस विधि से एक से अधिक व्यक्तियों का अध्ययन एक ही साथ संभव हो जाता है, जिससे समय तथा श्रम की बचत होती है।

स्पष्ट है कि वाह्य निरीक्षण विधि में कुछ ऐसे गुण पाये जाते है जिनके कारन यह विधि अंतर्निरीक्षण- विधि की तुलना में कहीं अधिक वैज्ञानिक है।